चन्द्रगुप्त II के सोने के सिक्के

Gold coins of Chandra Gupta II

चन्द्रगुप्त II के कुल आठ प्रकार के सोने के सिक्के उपलब्ध हुए हैं। यह पहला हिन्दू राजा था जिसने इतने बड़े पैमाने पर स्वर्ण मुद्रा तैयार की। उसने अपने पिता द्वारा प्रचलित किए गए कई सिक्कों को बन्द कर दिया और उसके स्थान पर नये सिक्के चलाये थे। चन्द्रगुप्त II द्वारा प्रचलित सिक्कों का वर्णन इस प्रकार है:—

1. धनुर्धारी प्रकार:— चन्द्रगुप्त ने इस सिक्के को अत्यधिक संख्या में निकाला। बयाना निधि से 798 सिक्के इस प्रकार के उपलब्ध हुए हैं। इस प्रकार के सिक्के गंगाघाटी में सब जगह मिलते हैं। इनकी तौल क्रमशः 121 ग्रेन, 124 ग्रेन तथा 127 ग्रेन है।

इस मुद्रा के अग्रभाग में राजा कुषाण-वेषभूषा में बायें हाथ में धनुष और दाहिने हाथ में कोणा या बाण लिये खड़ा है। राजा प्रभामण्डल युक्त कुण्डल, हार और भुजबन्द, कोट पायजामा, मोतियों से युक्त चिपकी टोपी धारण किये हुए है। सामने गरुड़ध्वज और बायीं बाँह के नीचे "चन्द्र" लम्बवत् रूप में लिखा है। वर्तुलाकार में "देव श्री महाराजाधिराज श्री चन्द्रगुप्तः" लिखा है। पृष्ठभाग में साड़ी, चोली और चादर पहने कुण्डल, हार और भुजबन्द धारण किए हुए सिंहासनस्थ लक्ष्मी की आकृति बनी है। पैरों के नीचे कमल बना है। मुद्रा पर लेख "श्री विक्रमः" लिखा है।

इस प्रकार की मुद्रा के बनावट के आधार पर दो वर्ग प्रतीत होते हैं। प्रत्येक वर्ग में कई उप-प्रकार हैं। दूसरे वर्ग की मुद्रा में राजा कुषाण वेषभूषा के स्थान पर भारतीय वेशभूषा में धोती पहने हुए प्रदर्शित है। पृष्ठ भाग में भी देवी कमल पर बैठी है तथा कानुकोपिया के स्थान पर कमल लिए हुए है। बार हाथ में पाश है। अग्रभाग का मुद्रा लेख "देव श्री महाराजाधिराज चन्द्रगुप्त" लिखा मिलता है।

2. सिंह-निहन्ता प्रकार:— सिंह-निहन्ता प्रकार के सिक्के समुद्रगुप्त के व्याघ्र निहन्ता सिक्कों के अनुकरण पर निर्मित हुए हैं। कला की दृष्टि से यह सुन्दर मुद्राओं में से एक है। मुद्रा के अग्रभाग में राजा धनुष-बाण या तलवार से सिंह को मार रहा है। छोटी-धोती और पटुका धारण किये है, सिर पर किसी मुद्रा में नंगा है तथा किसी में छोटी चिपकी हुई टोपी

पहने हैं, सिर पर किसी मुद्रा में नंगा है तथा किसी में चोटी-चिपकी हुई टोपी पहने हैं किसी मुद्रा में कोट पहने हैं तो किसी में ऊपरी भाग वस्त्र रहित है। राजा का शरीर सुन्दर और पौरुषमय दिखाया गया है। इस मुद्रा से ज्ञात होता है कि राजा को आखेट का शौक था।

सिक्का के पृष्ठ भाग पर देवी दाहिनी ओर देखते हुए सिंह पर बैठी है। फैलाये हुए दाहिनी हाथ में पाश तथा बाये हाथ में कमल है। देवी का एक हाथ कहीं-कहीं पर खाली भी दिखाई देता है और कहीं कमल के स्थान पर कार्नुकोपिया लिए हुए है। "सिंह विक्रमः श्री", श्री "सिंह विक्रम" "सिंह चन्द्र", इत्यादि लेख में उत्कीर्ण है।

3. अश्वारोही-प्रकार → यह एक नये प्रकार का सिक्का है जिससे राजा की अच्छी घुड़सवारी का परिचय मिलता है यह सिक्का सबसे पहले चन्द्रगुप्त II ने चलाया और बाद उसके पुत्र कुमारगुप्त प्रथम के समय में अत्यन्त लोकप्रिय बन गया। इन सिक्कों का तौल क्रमशः 121, 124, व 124 व 127 ग्रेन तक है।

इस मुद्रा के अग्रभाग में किसी-किसी मुद्रा में राजा प्रभामण्डल युक्त दिखाया गया है और किसी में प्रभामण्डल युक्त दाहिने या बायें देख रहा है। राजा भारतीय वेश में है। मुद्राओं पर "परम भागवत महाराजाधिराज श्री चन्द्रगुप्तः" या "महाराजाधिराज श्री चन्द्रगुप्त" लेख मिलता है।

सिक्का के पृष्ठभाग में प्रभामण्डल युक्त या प्रभामण्डल रहित आसन पर बाईं ओर बैठी देवी का चित्र है दाहिने हाथ में पाश तथा बायें हाथ में कमल पकड़े हुए है। इसपर "अजित विक्रमः" लेख उत्कीर्ण है।

4. छत्र प्रकार → यह एक नये प्रकार की मुद्रा है जिसे सर्वप्रथम चन्द्रगुप्त II ने प्रचलित किया। यह सिक्का काफी मात्रा में उपलब्ध है इन सिक्कों की औसत तौल क्रमशः 124 और 127 ग्रेन के बराबर है।

सिक्का के अग्रभाग में प्रभामण्डल युक्त राजा धोती या पायजामा पहने यज्ञवेदी में आहुति डाल रहा है। सिर पर किसी मुद्रा में टोपी युक्त मुकुट धारण किए हैं किसी मुद्रा सिर नंगा है। राजा के पीछे एक बौना छत्र लिए खड़ा है।

सिक्के के पृष्ठभाग में प्रभामण्डल युक्त लक्ष्मी खड़ी है। दाहिने हाथ में पाश है, जो कभी पुष्पमाला, गजमाला की तरह मालूम पड़ता है। बायें हाथ

Scanned with CamScanner

pag-03

में नालवाला कमल है। इस प्रकार की सिक्का पर "विक्रमादित्य" "विक्रमादित्य" लेख अंकित है।

5. पर्यंक प्रकार → यह सिक्का समुद्रगुप्त के वीणाधारी प्रकार के सिक्के का अनुकरण प्रतीत होता है। इस प्रकार के सिक्के अल्प संख्या में उपलब्ध हैं।

इस मुद्रा के अग्रभाग पर राजा भारतीय वेष-भूषा में धोती तथा आभूषण पहने पलंग पर बैठा है। सिर और शरीर का ऊपरी भाग अनावृत है। दाहिने हाथ में कमल एवं बाँया हाथ चारपाई पर रखा है। इस प्रकार की मुद्रा पर "महाराजाधिराज श्री चन्द्रगुप्तः विक्रमादित्य" परम भागवत महाराजाधिराज श्री चन्द्रगुप्तस्य विक्रमादित्यस्य" लिखा है।

सिक्का के पृष्ठभाग पर सिंहासन पर बैठी, कमल पर पैर रखे लक्ष्मी का चित्र है

6. पर्यंक स्थित राजा-रानी प्रकार :→ इस सिक्का के अग्रभाग पर समुद्रगुप्त के ध्वजधारी सिक्के के भांति प्रभामण्डल राजा लम्बा कोट तथा पायजामा पहने, दाहिने हाथ में दण्ड जैसी वस्तु लिए बाएं हाथ से आहुति डालता दिखाई देता है। बाएं हाथ के नीचे "चन्द्र" अंकित है

पृष्ठभाग पर राजा-रानी आमने-सामने पर्यंक पर बैठे हैं। दोनों के पीछे प्रभामण्डल बना है राजा भारतीय वेष-भूषा में धोती पहने बैठा है। बायाँ पैर मचिका के नीचे लटका है। रानी धोती और चोली पहनी है उसका बाया पैर नीचे लटक रहा है और दोनों आभूषणों से सुशोभित है। इस मुद्रा पर "श्री वीरगुप्तः लिखा है।

7. ध्वजधारी प्रकार → इस प्रकार का सिक्का केवल एक ही मिला है। इसकी तौल अज्ञात है अग्रभाग पर प्रभामण्डलयुक्त राजा बायीं ओर खड़ा, कोट पायजामा, कुण्डल, हार धारण किये बायें हाथ में राजदण्ड या फीताकार ध्वज लिए है और दाहिने हाथ से सामने वेदी पर आहुति डाल रहा है। वेदी के पीछे गरुडध्वज राजा के बाएं हाथ के नीचे "चन्द्रगुप्त" लम्बवत लिखा है।

पृष्ठभाग पर प्रभामण्डल युक्त देवी सिंहासन पर बैठी विराजमान है। दाये हाथ में पाश तथा बाये हाथ में कार्नुकोपिया लिए है। इस पर केवल "परम भागवत" लेख अंकित है।

8. चक्र-विक्रम प्रकार :— यह सिक्का चन्द्रगुप्त II के परम भागवत होने का द्योतक है। चक्र-विक्रम का यह भाग लगाया जाता है कि (सुदर्शन) चक्र के प्रसाद से यह चक्रधारी

विष्णु की कृपा से पराक्रमशाली हुआ है। बयाना निधि से इस प्रकार का केवल एक सिक्का मिला है।

इस सिक्का के अग्रभाग पर तीन प्रभामण्डल युक्त विष्णु की खड़ी मूर्ति है। उनके सामने तलवार लिए राजा खड़ा है। राजा का दाहिना हाथ भगवान विष्णु की ओर खड़ा है।

पृष्ठभाग पर लक्ष्मी कमल पर खड़ी है। उनका दाहिना हाथ नीचे लटक रहा है। उनमें वे मालयुक्त कमल धारण किये हैं। बाँये हाथ में नीचे एक शंख है। इस पर "चक्रविक्रमः" लेख अंकित है।

इस मुद्रा पर किसी भी राजा का नाम उत्कीर्ण नहीं मिलता है। परन्तु इस मुद्रा पर अंकित "सिंह-विक्रम" और "अजित विक्रम" चन्द्रगुप्त II की उपाधियाँ थीं। चन्द्रगुप्त द्वितीय विष्णु का भक्त था। जो- इसके मुद्रा लेखों में मिलने वाले "परम-भागवत" की उपाधि से स्पष्ट होता है। उसने दक्षिण-पूर्व पंजाब में व्यास नदी के किनारे विष्णु-पद नामक तीर्थ में ~~[illegible]~~ गरुड़ध्वज की स्थापना की थी।

अतः चक्रधारी विष्णु की कृपा के कारण ही "चक्र-विक्रम" उपाधि धारण की। सभी सिक्के बनावट तथा कला-कौशल से परिपूर्ण हैं।

Dr. Birendra Prasad Singh
Associate Professor
Deptt of AIH&AS
Shershah College Sasaram.

Scanned with CamScanner